सपनों के मैदान

अमेरिका की खेल फ़िल्में

डेविड जे. फायरस्टीन

अमेरिका के लोग सभी तरह के खेलों से प्यार करते हैं। इसीलिए अमेरिकी फ़िल्म निर्माता कहानी के दायरे से कहीं ज़्यादा व्यापक संदेश लोगों तक पहुंचाने के लिए अपनी फ़िल्मों में बार-बार खेलों से जुड़े कथानक शामिल करते हैं।

कोलाज: हेमंत भटनागर, फोटो © क्रिएटिव / गेट्टी इमेजेज

दुनिया में ऐसे बहुत कम देश हैं, जिनमें खेल, कोई एक खेल नहीं, बल्कि आमतौर पर खेल राष्ट्रीय जीवन में इस हद तक व्याप्त हैं, जितने कि अमेरिका में। खेल अमेरिकी जीवन, बातचीत और शब्दावली के तानेबाने का हिस्सा हैं। इस हद तक कि प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं को राजकाज के मामलों में 'थ्रोइंग अप ए हेल मेरी', 'स्कोरिंग ए स्लैम डक', प्लेइंग हार्डबॉल' और 'हिटिंग बिलो द बेल्ट' जैसे खेलों के जुमलों का इस्तेमाल करते सुना जा सकता है। वास्तव में राष्ट्रपति का छोटा सा काला बॉक्स जिसमें अमेरिकी परमाणु शस्त्रों को चलाने के लिए आवश्यक कोड हैं, 'द फुटबॉल' कहा जाता है।

अमेरिकी जीवन में खेलों का केंद्रीय स्थान समकालीन अमेरिकी सिनेमा में काफी हद तक प्रतिबिंबित होता है। दशकों से अमेरिकी फ़िल्मकारों ने सबसे ज़्यादा प्रेरणादाई, रोमांचक और यादगार फ़िल्में बनाने के लिए खेलों का सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया है। यह परंपरा 20 वीं सदी के पूर्वार्ध में शुरू हुई, लेकिन आज भी गतिशील है। हाल के कुछ साल में ही हॉलीवुड ने फुटबॉल, बास्केटबॉल, बेसबॉल और हॉकी से लेकर बॉक्सिंग, घुड़दौड़ और यहां तक कि सर्फिंग तक, लगभग हर बड़े खेल पर फ़िल्में बनाई हैं।

1970 के दशक के मध्य से चार अमेरिकी खेल फ़िल्मों ने एकेडमी पुरस्कार या ऑस्कर जीते हैं। हाल में क्लिंट ईस्टवुड की एक महिला बॉक्सर पर फ़िल्म *मिलियन डॉलर बेबी* (2004) ने चार ऑस्कर जीते, जिनमें सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार शामिल था (यह सम्मान इसके अलावा सिर्फ दो खेल फिल्मों को मिला है)। हालांकि अमेरिकी खेल फिल्में अमेरिकी जीवन की पूर्णता और मानवीय मनोविज्ञान को जानने-समझने के लिए एक जैसे माध्यम का इस्तेमाल करती हैं, लेकिन वे अमेरिकियों को प्रिय मूल्यों के बारे में हमें बहुत से अलग-अलग पहलुओं से अवगत कराती हैं।

अमेरिकी फुटबॉल हमेशा से अमेरिकी फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय रहा है और हाल में वह अमेरिकी फिल्मों में सबसे ज़्यादा दिखाए जाने वाले खेलों में बेसबॉल से आगे निकल गया है। पिछले कुछ साल में ढेर सारी गंभीर, उच्च स्तर की फुटबॉल फ़िल्में रिलीज हुई हैं, जिनमें प्रतिकूल स्थितियों से पार पाने (*वी आर मार्शल्स*, 2006), अपने सपनों को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करने (*इनविंसिबिल*, 2006), सर्वश्रेष्ठता के लिए लगातार प्रयास (*फ्राइडे नाइट लाइट्स*, 2004), नस्लीय और वर्ग विभाजन पर मरहम लगाने और समुदायों के विकास में खेलों की ताकत (*रिमेम्बर द टाइटंस*, 2000) और अमेरिकी पेशेवर खेल उद्योग के घोर व्यवसायीकरण पर एक एथलीट की आंतरिक प्रतिस्पर्धी भावना की जीत (*एनी गिवन संडे*, 1999) जैसे विविध कथानक खंगाले गए हैं। ये कथानक भले ही कितने ही भिन्न हों, हाल की इन फ़िल्मों से एक व्यापक संदेश उभरता है: फ़ुटबॉल अपने विशाल स्तर पर भव्यता, जुझारूपन और हां, जोरदार प्रहार करने के लिहाज से खुद अमेरिकी जीवन के लिए सबसे ज़्यादा पूर्ण और स्पष्ट रूपक है।

अमेरिका में दूसरे और तीसरे नंबर के सबसे लोकप्रिय खेल बास्केटबॉल और बेसबॉल पर हाल में अमेरिकी फ़िल्मों में अपेक्षाकृत कमी आई है। प्रेरणादायक सच्ची कहानियों पर आधारित हाल में अमेरिकी बास्केटबॉल पर बनी दो फ़िल्मों में नस्लीय समझौते (*ग्लोरी रोड*, 2006) और टीमवर्क और आत्म-सम्मान (*कोच कार्टर*, 2005) जैसे विषय उठाए गए हैं। खेल फिल्मों की श्रेणी में बने कुछेक वृत्तचित्रों में से एक अमेरिकी बास्टकेटबॉल क्लासिक (*हूप ड्रीम्स*, 1994) में अमेरिका के अंदरुनी शहरी जीवन और सपनों की ताकत और वास्तविक जीवन में इनकी सीमाओं का चित्रण किया गया है। हाल में बनी दो बास्केटबॉल फ़िल्में अपने-अपने तरीकों से इसी बात को सामने लाती हैं : हमारी त्वचा का रंग कुछ भी हो, हम सामाजिक-आर्थिक सीढ़ी पर किसी भी पायदान पर हों, जब हम एक ज़्यादा बड़ी टीम और ज़्यादा ऊंचे लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्ध हो जाते हैं, तो हम बहुत बड़ी चीज़ें कर सकते हैं। *हूप ड्रीम्स* हमें बताती है कि ऐसा होने पर भी शायद यह इतना आसान नहीं होने वाला है। इस बीच, एक सच्ची कहानी से प्रेरित पिछले कुछ साल की एक बड़ी बेसबॉल फ़िल्म (*द रूकी*, 2002) हमें सच्चे अमेरिकी तरीके से याद दिलाती है कि अपने सपनों तक पहुंचने के लिए कभी भी उम्र बाधा नहीं होती, चाहे उन्हें साकार करने के खिलाफ स्थितियां कितनी ही विषम हों।

केवांकि जैनसिविल © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

सौजन्य: एनबीसी यूनिवर्सल

बाएं: सीबिस्कुट *फ़िल्म में जॉकी की भूमिका अदा करने वाले टोबी मैग्वायर 2003 में फ़िल्म के प्रीमियर के मौके पर।*
ऊपर: सीबिस्कुट *से लिया गया एक चित्र।*
दाएं: मिलियन डॉलर बेबी *में बॉक्सर की भूमिका के लिए वर्ष 2005 की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए मिले ऑस्कर के साथ हिलैरी स्वैंक।*
बिल्कुल दाएं: कोच कार्टर *फ़िल्म के प्रचार के लिए बने पोस्टर के सामने खड़े केन कार्टर। उन्होंने ही इस बास्केटबॉल फ़िल्म के लिए प्रेरित किया था।*

मार्क जे. टेरिल © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

हॉलीवुड ने लंबे समय से बॉक्सिंग के प्रति आकर्षण दिखाया है। हाल के वर्षों में बनी तीन प्रमुख बॉक्सिंग फ़िल्में (*रॉकी बालबोआ*, 2006, *सिंड्रेला मैन*, 2005 और *मिलियन डॉलर बेबी*, 2004), सभी ऐसी क्लासिक कहानियां हैं जिनमें कमजोर लोगों की बात कही गई है (*मिलियन डॉलर बेबी* में अन्य,

ऑडेसा, टेक्सास में फ्राइडे नाइट लाइट्स फ़िल्म के लिए फ़ुटबाल मैच की शूटिंग।

एल. एम. ओरेरो © ए. पी.-डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

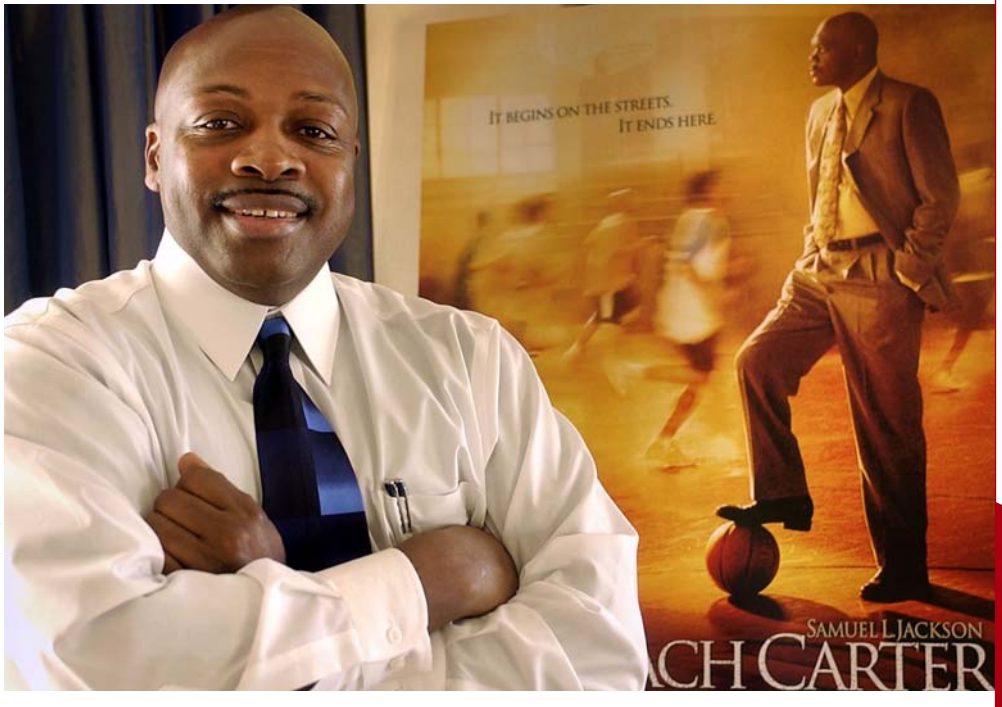

टॉम ग्रिमोल्ड © ए. पी.-डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

ज़्यादा जटिल विषय को भी लिया गया है)। खेल फिल्मों के अमेरिकी निर्माताओं की हमेशा से पसंदीदा कमजोर वर्ग की विषयवस्तु ओलिंपिक हॉकी रिंक (*मिरेकल,* 2004) और घुड़दौड़ के ट्रैक (*सीबिस्कुट,* 2003) तक फैली हुई है, जिनमें एथलीट (और *सीबिस्कुट* में एक रेस कोर्स) कठिन स्थितियों में चकित करने वाली विजय हासिल करते हैं।

सामूहिक रूप से ये फिल्में अमेरिकी मूल्यों के बारे में काफी कुछ कहती हैं, लेकिन वे विदेशी दर्शकों के साथ तार जोड़ लेती हैं। ऐसा इसलिए है कि ये फ़िल्में अपने मूल में उन खेलों के बारे में कम हैं जिन पर ये बनी हैं और हममें से प्रत्येक के उस हिस्से के बारे में ज़्यादा हैं, जो मैदान में उतरने, अपना सब कुछ झोंक देने और अपने सपने साकार करने के लिए जूझता है।

***डेविड जे. फ़ायरस्टीन** विदेश विभाग में काम करते हैं और तीन पुस्तकें लिख चुके हैं।*